पूजासामग्रीका महत्त्व

卐 — ‘धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र’ ग्रन्थमालाकी भूमिका — 卐

प्राचीन कालमें हिन्दुओंकी शिक्षापद्धतिमें ‘धर्म’ विषय अन्तर्भूत होता था । धर्मका महत्त्व ज्ञात होनेसे बहुसंख्य हिन्दुओंके जीवनका केन्द्रबिन्दु धर्म ही था । कालान्तरमें हिन्दुओंको धर्मशिक्षा मिलनी बंद हो गई । स्वाभाविक ही हिन्दुओंमें धर्माचरणकी प्रवृत्ति भी घट गई । वर्तमानमें मनाए जानेवाले त्योहार, उत्सव, व्रत तथा परम्परागत धार्मिक कृत्योंके कारण अधिकांश हिन्दुओंकी धर्मनिष्ठा एवं ईश्वरोपासना टिकी हुई है । विविध नित्य एवं नैमित्तिक धार्मिक कृत्योंको इसी कारण हिन्दुओंके सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक जीवनमें एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है । धार्मिक कृत्योंमें दैनिक पूजा-अर्चना तथा मन्दिर जानेसे लेकर मृत्युके उपरान्त करनेयोग्य आवश्यक अनेक कृत्योंका समावेश होता है । ये धार्मिक कृत्य आज भी उतनी ही श्रद्धासे किए जाते हैं । इसका एकमात्र कारण है इन कृत्योंके आधारभूत सिद्ध अध्यात्मशास्त्रसे लोगोंको हुई अनुभूतियां !

धार्मिक कृत्य करनेवालेको कृत्यका यथार्थ शास्त्र ज्ञात हो, तो कृत्यके प्रति उसका विश्वास बढता है तथा महत्त्व समझमें आनेसे वह कृत्य अधिक श्रद्धापूर्वक करता है । श्रद्धापूर्वक किए गए कृत्यका फल अधिक अच्छा होता है । वर्तमानमें उपलब्ध धर्मशास्त्रसम्बन्धी ग्रन्थोंमें धार्मिक कृत्यकी जानकारी तो दी है; परन्तु उसकी सूक्ष्म स्तरकी आध्यात्मिक कारणमीमांसा नहीं दी गई । ईश्वरीय कृपासे प्राप्त ज्ञानकी ग्रन्थमाला ‘धार्मिक कृत्योंका अध्यात्म-शास्त्र’ की विशेषता यह है कि इसमें धार्मिक कृत्योंके सूक्ष्म अध्यात्मशास्त्र को स्पष्ट करनेके साथ कृत्यकी उचित पद्धति भी बताई गई है ।

जो बडे-बूढे या जानकार लोग कहते थे, उसपर विश्वास रख पहलेकी पीढियां कृत्य करती थीं । आज युवा पीढी प्रत्येक बातकी कारणमीमांसा

को जाननेपर ही उसे स्वीकार करती है । धार्मिक कृत्योंकी शास्त्रीय कारणमीमांसा युवा पीढीको ज्ञात हो, तो वे अध्यात्मकी ओर शीघ्र आकर्षित होंगे ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस ग्रन्थमालामें दिए गए धार्मिक कृत्योंको आचरणमें लानेकी सद्‌बुद्धि सबको मिले और उनकी शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति हो । – **संकलनकर्ता**

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

१.	पूजाकी थालीमें विभिन्न घटकोंकी रचना किस प्रकार करें ?	१६
२.	सप्तनदियोंका जल	१७
३.	रुईके वस्त्र	१९
४.	जनेऊ	२०
५.	हलदी, कुमकुम, सिन्दूर, गुलाल एवं गन्ध	२१
६.	इत्र	३४
७.	पुष्प	३६
८.	पत्री	४१
९.	अक्षत	४५
१०.	गन्धाक्षत, अष्टगन्ध, तिलक (चन्दन), रक्तचन्दन, हलदी, कुमकुम, बुक्का एवं सिन्दूरका महत्त्व	५०
११.	पानका पत्ता	५१
१२.	सुपारी	५३
१३.	नारियल	५६
१४.	पंचखाद्य (सूखा मेवा), पंचफल एवं हलदीकी गांठ	५६

१५. नीरांजनकी बाती ५७
१६. उदबत्ती (अगरबत्ती) एवं धूप ५८
१७. कर्पूर ६७
१८. नैवेद्य (भोग) ६८
१९. दक्षिणा ६९
२०. भस्म, गायका गोबर एवं पानी ७०
२१. रंगोली ७१
२२. पंचगव्य ७२
२३. पूजासामग्रीके घटकोंसे सीखनेको मिले गुण ७४
२४. पूजासे सम्बन्धित विविध वस्तुएं, उनसे होनेवाले लाभकी मात्रा, शुद्ध करनेका माध्यम एवं शुद्ध होनेवाली देह ७५

उचित नामजपद्वारा उन्नतिका मार्ग दिखानेवाला सनातनका ग्रन्थ !

नामजप कौनसा करें ?

- जनसामान्यके लिए 'ॐ'का जप कठिन क्यों ?
- साधनाके आरम्भमें कुलदेवताका नाम क्यों जपें ?
- गुरुद्वारा दिए गए नामजपका महत्त्व क्या है ?
- प्रकृतिके अनुसार विविध देवताओंका नामजप कैसे करें ?
- गुरु और सन्तों के नामका नामजप क्यों नहीं करना चाहिए ?
- नामजपका अर्थ समझकर नामजप करना अधिक उचित क्यों है ?